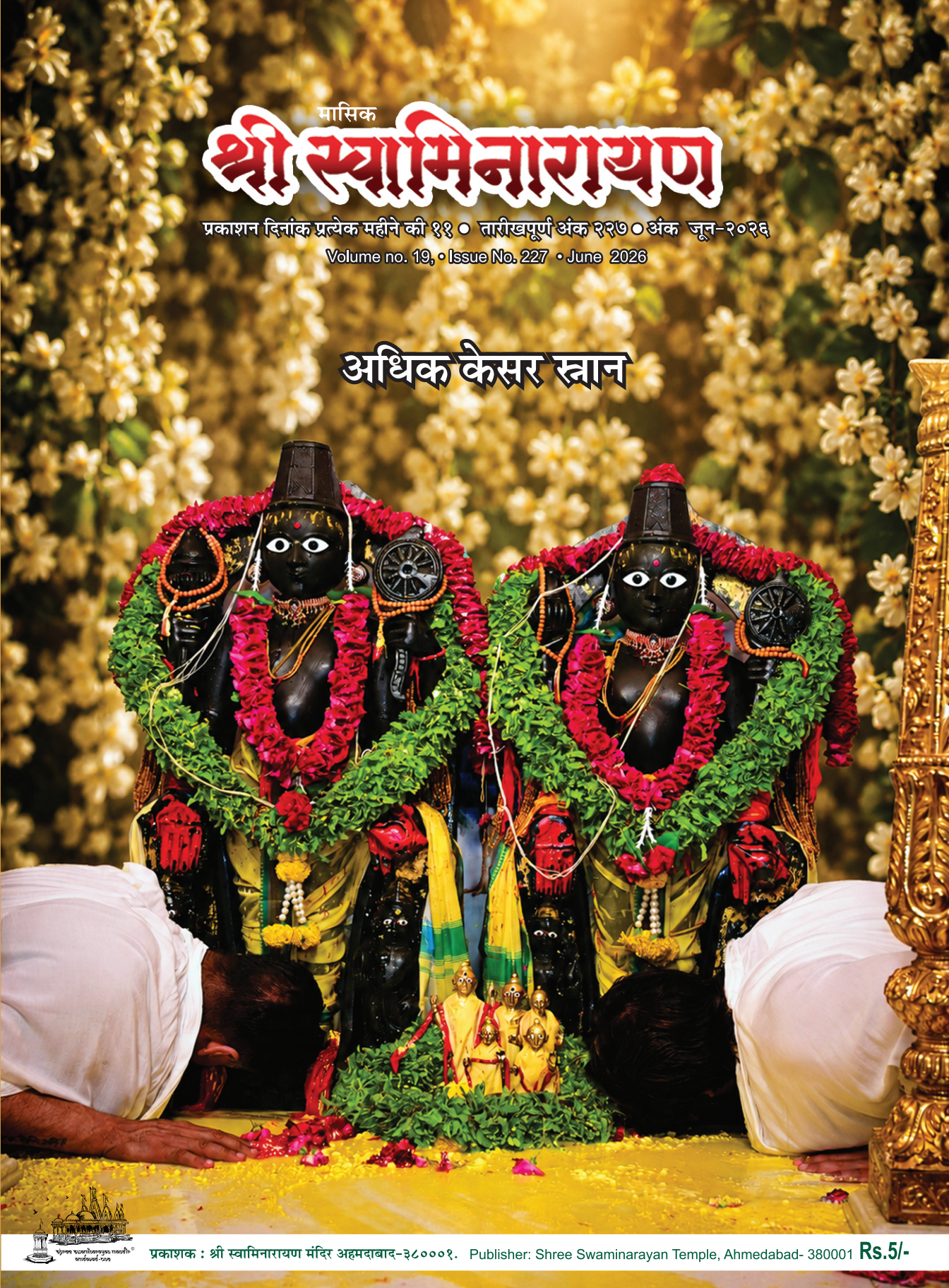
मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ ● तारीखपूर्ण अंक २२७ ● अंक जून-२०२६
Volume no. 19, • Issue No. 227 • June 2026

अधिक केसर स्नान



प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-



मांडवी (पूनमनगर-कच्छ) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा विधि करते
प.पू. आचार्य महाराजश्री



दहींसरा (कच्छ) मंदिर में पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा करते
प.पू. आचार्य महाराजश्री



टीकर (परमार-मूली प्रदेश) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते
प.पू. आचार्य महाराजश्री



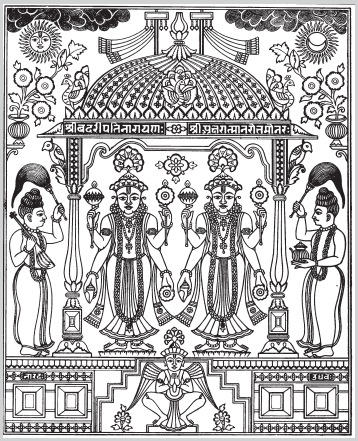
नाना अंकेवालिया मंदिर के शत वार्षिक पाटोत्सव पुनः प्रतिष्ठा के
अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री







मानकुँवा (कच्छ) मंदिर में पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा करते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री



संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८

श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

नारायणपुरा, अहमदाबाद.

फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७

www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८

श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी

आज्ञा से

तंत्रीश्री

स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(महंत स्वामी)

मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,

अहमदाबाद-३८० ००१.

मो. ९३१३७०६०९५

magazine@swaminarayan.in

www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये

E-mail :

magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र



वर्ष - १९ ● अंक : २२७ ● जून-२०२६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०४.	श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति के मुख से अमृतवचन	०६
०५.	लक्ष्मीदास जानी का संकल्प पूर्ण किये	१०
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से	११
०६.	भक्ति सुधा	१२
०७.	सत्संग समाचार	१६

अस्मदीयम्

अभी अधिक पुरुषोत्तम मास चल रहा है। इस महीने में भगवान का विशेष भजन-स्मरण, कीर्तन भक्ति को इस लिये पुरुषोत्तम मास प्रति तीन वर्ष के बाद आता है। अपने अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से पूरे अधिक मास में वर्ष के मध्य आने वाले उत्सवो को उल्लास पूर्वक मनाया जाता है। इस महीने में कथा-पारायणो द्वारा अहमदाबाद शहर के हरिभक्तो ने श्रीहरि नाम स्मरण रसपान का महालाभ लिये।

भगवान श्री नरनारायणदेव को इस वर्ष ढाई मास तक चंदन का वाधा का अद्‌भूत लाभ, सभी हरिभक्त उठाये।

अभी आने वाले समय में गर्मी का प्रकोप बढता जा रहा है। हम सभी को सतत जागृत होने की आवश्यकता है। हर गाँव, सोसायटी में वृक्ष लगाये। और उसके रक्षा करे। आने वाले समय में पर्यावरण को बचाने का यह माध्यम है। यदि जल बचाव एवम् वृक्षारोपण नही करेगे तो जीवो के लिये पानी दुर्लभ हो जायेगा।

भगवान श्रीहरि के समय मे ताल-कुँवा स्वयं खोदना तथा प्राणीयो को जल प्राप्त हो ऐसा प्रयास करते थे। आज भी जो पुराने ताल-वाव गाँव गाँव में है। उसे संरक्षित करके भविष्य में उपयोगी हो ऐसा कार्य करना चाहिए।

अपने सभी हरि के आश्रित हरिभक्तो को अपने देश के पर्यावरण की रक्षा हो इस लिये विशेष जागृति हो। इस लिये धर्मकुल की विशेष अनुसंसा है प्रति परिवार एक वृक्ष लगाये। तथा पानी को जरुरत हो तो उसका उपयोग करे। बर्वाद नही करे।

जिस प्रकार बूँद-बूँद से सरोवर भर जाता है। उसी प्रकार बूँद-बूँद पानी को बिगाडे भी नही। इस प्रकार जल का संचय करें। तथा आने वाले समय में उसका लाभ ले। इस समय अमेरिका-ईरान के मध्य युद्ध के कारण पूरी दुनिया पेट्रोल, डीझल, गैस के लिये परेशान हो गयी है। उसी प्रकार आने वाले वर्षो में पानी के लिये युद्ध होगा ऐसा कहा जा सकता है। इस लिये हमे आज से जागृत होना है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण





प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की

रुपरेखा (मई-२०२६)

१-२ श्री स्वामिनारायण मंदिर मानकुवा (कच्छ) पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर (भाईयो-बहेनो का) दहींसरा (कच्छ) पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

४ पूनमनगर मांडवी (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा पर पधारना ।

५ श्री स्वामिनारायण मंदिर डीसा रजत जयंती महोत्सव पर पधारना ।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका १९९ वे पाटोत्सव पर पधारना ।

८ धमीज श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव कथा के अवसर पर पधारना ।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर घोडासर भूमिपूजन के अवसर पर पधारना ।
उनावा गाँव मे महाकाली माता रजत जयंती महोत्सव के अवसर पर पधारना ।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर जामफल वाडी अहमदाबाद पुनः मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर गुनमा (ता. माणसा) रजत जयंती महोत्सव के अवसर पर पधारना ।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर टीकर (मूली प्रदेश) पुनः मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर मे कथा प्रसंग के यजमान परिवार को आशीर्वाद देने के लिये पधारना ।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर छोटे अंकेवालिया (मूली प्रदेश) पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

१९ अधिक मास निमित्ते परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का महाभिषेक अपने करकमलो से पूर्ण किये ।

२२-२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) श्री वृंदावन सेवा अमृत महोत्सव के अवसर पर पधारना ।

२७ एकादशी के अवसर पर श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना ।

३१ अधिक मास के अवसर पर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव को केसर स्नान अपने करकमलो से पूर्ण किये ।

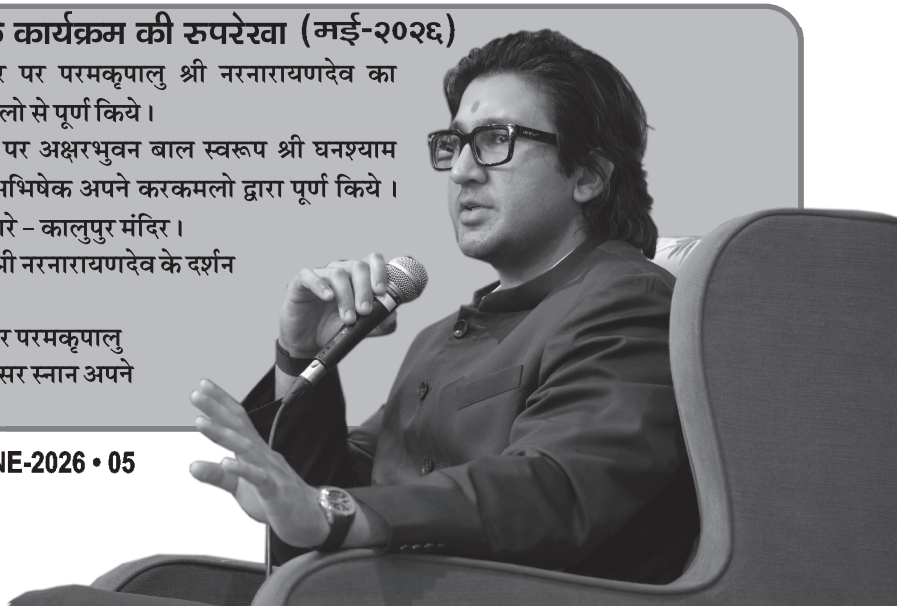
प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (मई-२०२६)

१९ अधिक मास के अवसर पर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का महाभिषेक अपने करकमलो से पूर्ण किये ।

२४ अधिक मास के अवसर पर अक्षरभुवन बाल स्वरूप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव-अभिषेक अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।
अखंड महामंत्र धुन में पधारे - कालुपुर मंदिर ।

२७ एकादशी के अवसर पर श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना ।

३१ अधिक मास के अवसर पर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव को केसर स्नान अपने करकमलो से पूर्ण किये ।

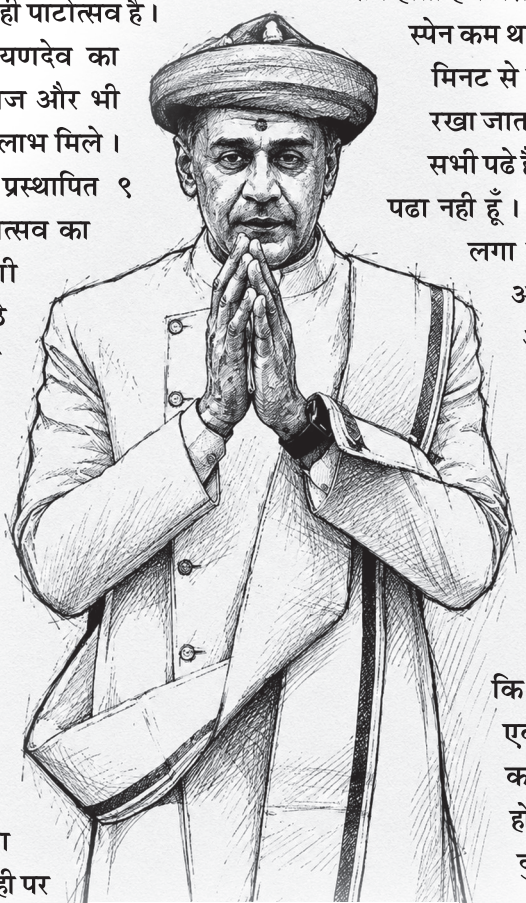


श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति के मुख से

अमृतवचनो

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी–बापुनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर, भुज २०३ वाँ वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर ता. २०-०४-२०२६ : आदरणीय संतो, प्यारे हरिभक्तो, हम सभी भाग्यशाली है कि कल प्रातः नरनारायणदेव का पाटोत्सव है। इसका दर्शन का लाभ उठाये। विशेष करके ये यजमान परिवार ने बोला था कि पाटोत्सव में आयियेगा। मैं भूल गया था। बाय डिफाल्ट आना ही होता है। हमने उनसे पूछा, आप कैसे कब आये। तो बोले। मेरा ही पाटोत्सव है। वह भाग्यशाली है जो नरनारयणदेव का पाटोत्सव का लाभ मिला। आज और भी लाभ मिले। नरनारयणदेव का लाभ मिले। विशेषकर महाराज के द्वारा प्रस्थापित ९ मंदिरो में से इस मंदिर के पाटोत्सव का लाभ मिले। हम सभी नरनारायणदेव के प्रांगण में बैठे है। प्रांगण मैं बैठकर नरनारायणदेव के पाटोत्सव का लाभ मिला। अपनी सभी प्रगति नरनारायणदेव के कारण से है। नरनारायणदेव हम सभी के लिये तपस्या किये है। तपस्या करके सुखी बनाये है।



सुबह में मै मेमका मे या। जय स्वामिनारायण बच्चे (अचानक एक छोटा सा बच्चा चरण स्पर्श करके चला गया) यह कुनबी का लडका कही पर कही से निकल सकते है। अभी सोच रहा था। नारणदास के साथ बात कर रहा था। कि युद्ध हार्मुज ईरान में चल रहा है। वहाँ पर कुनबी को रखते तो खेल खत्म कर देता। कोई ईधर से तो कोई उधर से निकल जाता और पता भी नही चलता। अभी स्वामीने शिबिर की बात कहे है। आज के समय में आदमी के पास ध्यान केन्द्रित करने का समय कम होता है। वैसे तो अनादि सम यमें अटेन्सन स्पेन कम था। इस लिये विद्यालयो में ३५ मिनट से लेकर ४५ मिनट का कालांश रखा जाता है। बाद में ब्रेक होता है। आप सभी पढे है तो जानते ही है। मैं तो अधिक पढा नही हूँ। बीच से छोड दिया था। मुझे लगा कि यह अपना काम नही है। अपना जो कार्य है वह करे। अर्थात् पुनः गाँव में धुमे।

बात यह है कि मनुष्य का अटेन्सन स्पेन बहुत कम है। जब समय व्यतीत होता है। उसी प्रकार एटेन्सन को ड्राईवर्ट करने के लिये कई साधन बनते जा रहे है। मै कई बार पहले बता चुका हूँ, कि पूर्व के समय में ऋषि मुनि थे। एक स्थान पर बैठकर तपस्या करते थे। वह गुफा हो या जंगल हो। उनके पास वैकल्पिक दुनिया नही थी। वाई-फाई,

मोबाईल, टी.वी. नही थी। मनोरंजन कम था। कोई कार्य नही था। इतनी जनसंखया भी नहीं थी। आज बडे मे बडे बच्चे और बच्चियाँ है। आप सभी हरिभक्त २०२६ के समय में भगवान के प्रति निष्ठा है। स्वामिनारायण सम्प्रदाय मे दिखायी देता है। नरनारायणदेव की गद्दी में आप देखे। कोई लंदन से वापस आया है। तो कोई केन्या से आया है। इसमे से समय निकालकर भगवान में लगकर कार्य कर रहे हैं। वे अभिनंदन के पात्र है।

अभी स्वामीने मोम्बासा में शिबिर की बात किये है शिबिर की आवश्यकता है। विशेष कर जो बच्चे बच्चियो की उम्र बढ रही है। क्योकि अधिक उम्र के जो वृद्ध लोग है। मैने देखा है। जब गाँवो में कथा-वार्ता की जाती थी। प्रातः काल कथा-वार्ता होते समय इसमें के वृद्ध संत बैठे है। इस शिक्षापत्री भाष्य, वचनामृत का सत्संगिजीवन पढे। शिक्षापत्री के श्लोक पढ़कर पूछे क्या आया है ? अर्थात् कोई शयन नही करता था। अब सोना अनिवार्य है। यह भोपू आवाज करता है। इसलिये लोग सो नही सकते है। कथा-वार्ता के मध्य पारस्परिक संवाद होना अति आवश्यक होता है। पूरा वचनामृत आप देखे। इस में आपस में संवाद होता है। विचारो को आदान-प्रदान होता है। किसी का प्रश्न हो या न भी हो तो भगवान उसका निस्तारण लाकर रखे है। जब तक इष्ट्र एक्सन वेस नही होता है। जब तो उसमें जिज्ञासा वृत्तिया जिज्ञासा नही आये तब तक डेमनेस आता है। इसके बाद **Follong the crowd** (टोला का अनुसरण) चलता है। कुछ नया नही होता है। यह लेवल यदि उपर ले जाना हो तो **you have to be interact** को समझना पडेगा। प्रश्न हो और उत्तर हो यह प्रश्न अपने कच्छ चौरासी में वर्षो से बना हुआ है। पीढीदर पीढी उलझा हुआ है। यह लगातार बना रहे अति आवश्यक है। यदि ये नही रहता तो कैसा होता ? कथा पूर्ण हुई। भोजन हो गया। खडे होकर चल दिये। आधी सभा खडी हो गयी। और चली भी गयी। कथा-वार्ता आवश्यक है। कथा-वार्ता के अलावा अच्छा गुण नही आता है। यह महाराजने खुद कहा है। इकस्ट्रा एक्टिव दुनिया जो है। उसे सुरक्षा देना आवश्यक है।

आज प्रतिदिन नये मंदिर बन रहे है। अभी दो प्रतिष्ठा लिखी गयी है। दहींसरा और मानकुवा। जो फिर से बनाये गये है। उसका पुनःनिर्माण किया गया है। आज परमार मे कुछ वस्तुओ को बचाना है। यह **Seriously** बात कह रहा हूँ। मैं परम्परा का पक्षथर हूँ। जो परम्परा समाप्त हो गयी है। यदि सिद्धान्त खो गया तो **then we could for nothing** (बाद में हम कुछ नही कर सकते है) अपना कोई काम नही। परम्परा-सिद्धान्त रहने पर भगवान रहेगे। इसी परम्परा के लिये शिबिर, कथा, वार्ता हो या भगवान सम्बन्धी कोई कार्य है हो रहा है।

सभी लोग प्रेम से दर्शन करने आये। ऐसे नरनारायणदेव हम सभी को मिले है। ये अपने नरनारायणधेव है। एक गाँव बाँधकर रखले। बात करना साधारण है। ये नरनारायणदेव किसके है। हम किसके है ? नरनारायणदेव के ? मैने पूछा आप ने उत्तर गिया है। माना सरल है। जानना कठिन है। अनुभव से जाना जाता है। जानने और मानने में अन्तर है। मानकर जानना है। प्रतिदिन महिमा बढती जा रही है। हम सब किसके बच्चे है। नरनारययणदेव के है। उनका ध्यान हमेशा बना रहता है। उनका साक्षातपन सदैव रहे। इसके लिये ये उत्सव है। इस लिये यह प्रदर्शन है।

ये महंत स्वामी इतनी उम्र में यहाँ पर आये है। दो दिन गिर गये थे। मै रुम में गया था। लेकिन उनको चिंता लगाव उतना ही है। कोई अंतर नही है। आप सभी भाग्यवान है कि ऐसे संत चिंता रखकर सभी कार्य करते है। भुज का सत्संग सुरक्षित है। यह बचाकर रहना हम सभी की जिम्मेदारी है। क्योकि हम सभी देव के है। इसलिये विशेष चिंता रखना है। कही प्रेम मे बह नही जाये। दुनिया में सभी मौका का लाभ लेने के लिये बैठे है। बाँह पकड कर चेक लेकर चले जायेगे। आप भी चले जायेगे। खो

जायेगे । ऐसा ही होना है । संसार में ऐसा ही चल रहा है । मार्केटिंग अच्छी चल रही है । धर्म का व्यापारीकरण हो गया है । लोग समझ नही पा रहे है हम कहाँ पर जाये ? बचाने का कार्य अपना है । यह नही बात है । आप सभी अनुभव कर रहे होगे ।

अब आप का लड्डू खाने का समय है । या खिचडी खाने का समय हुआ है ? देवप्रकाश स्वामी को हमारा रसोईवाला डायाबिटीज का लड्डू बनाता है । गुड का लड्डु, गुड में सुकोज नही आता है ? मुझे एक दिन बता रहे थे कि यह लड्डू अच्छा है । डायाबिटीस वाले खा सके ऐसा बनाया है ? यह कैसा ? जादू से ? राजू मेरा मित्र है । इस लिये पूछ सते है । अगल-बगल उसके सिनियर बैठे है ।

End of the day हम सभी को इतना मिला है । यह भगवान की दया से प्राप्त है । युवक संत से लेकर वृद्ध संत इतना ध्यान देते है । अधिक अच्छा सत्संग है । कही पर कमी नही है । कमी कही पर है तो । वह अपनी कमी है । मैं थककर आया था । गाडी में थकान भी लगती है । गाडी से उतरकर देव का दर्शन करते है । आप सभी को देखते है । हँसते है आप लोगो को देखकर फ्रेश हो जाते है । पहले से अच्छा हो जाते है । अर्थात् वातावरण का प्रभाव पडता है . इसलिये महाराजने कहा है कि सत्संग की भीड में रहे । यह प्रायोगिकबात है । मै प्रतिदिन का अनुभव करके बताता हूँ । मै कथा करने नही बैठा हूँ । मुझे भाषण भी नही आता है । बड़े बापजी कईबार कहे है कि नोट लिखना चालु करो । मैने कहा ँ मुझे नही आता है । आवश्यकतानुसार पढाई किया है । आगे कोई ईच्छा नही है । हम भगवान की बात करते है । भगवान की महानता बनी रहे । ऐसा कार्य करना है ।

यह वरसाणी परिवार प्राचीन जोगी है । उन सभी गैंग को चच्डी पहनते हुए देखा है । गाडी लेकर कही धुमने गये थे । हरीश टेकरे से गड्डा दिखा रहा था । कितने वर्ष हो गये ? ३५ से ४० वर्ष हो गया ? विशेषकर इस परिवार को धन्यवाद देता हूँ कि मुझे भगवान का स्पर्श करने के अवसर मिला । यह बड़ी भाग्य है कि भगवान के द्वारा प्रस्थापित मूर्ति का स्पर्श हुआ । वह बड़ी बात है । आप सभी को धन्यवाद, आप सभी पर भगवान की असीम कृपा बनी रहे । ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, मेघपर (कच्छ) का १५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर ता. १८-०४-२०२६ : आदरणीय संतो, प्यारे हरिभक्तो, सभी को जय स्वामिनारायण अभी आ रहे थे । बहुत बड़ी शोभायात्रा थी । गाँव-गाँव से हरिभक्त अधिक संख्या में आ रहे थे । कुल्फी-शरबत की व्यवस्था अच्छी थी । एक स्वामीने अभी कहा कि एक व्यक्ति को संत का दर्शन हुआ । वह संत जमीन से उपर चल रहे थे । उपर क्यो चल रहे थे । बोले उसे भगवान मिले थे इस लिये । भगवान मिल जाये तो बात ही क्या है । यह प्राकृतिक गुण है कि जो मानव उच्चता पर जाता है । वह विनम्र हो जाता है । आज के समय मे जो उपर जाता है । वह पुनः नीचे नही उतर पाता है ।

दूसरी बात केशवचरण स्वामीने कहा है कि भूमि कुपोषित हो गयी है । इन्द्रियो के आहार चारो तरफ से कुपोषित हो गयी है । इसलिये क्या करे ? नाक, कान, आँख देखेगी, सुनेगी । मोबाईल हो, आईपेड हो, टेलीविझन हो अर्थात् देवचरण स्वामी, पोषण देना अपना कार्य है । मूल धंधा तो अपना यही है ।

यह बात में से बात आयी । लेकिन सत्य है कि आज भी जब लिखना पडता है कि शुद्ध घी, शुद्ध **GMO (Genetically Modified Organism),** नेचरली **Ingredient** (भोजन बनाने की वस्तुए) अपनी दशा क्या होगी ? बीते दिन रास्ते में पेट्रोल पम्प पर खडे थे । तो **Free Air** लिखा था । विचार आया कि मुक्त में पानी नही मिलता है । अब हवा मुफ्त मे नही मिलेगी । ऐसा दिन भी आयेगा । यह अपने शास्त्र में लिखा गया है । सत्संगिजीवन पढे । उसमें अन्तिम मे कलियुग के धर्म आते है उसे पढे । चारो तरफ

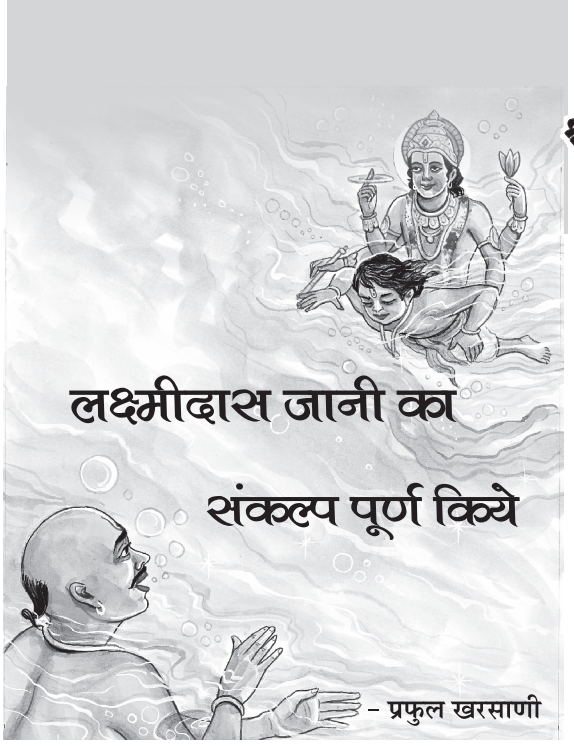
नंद संतो ने लिखा है वह आज प्रत्यक्ष दिखायी दे रहा है। एक समय आप कल्पना नही कर सकते थे कि पानी के लिये पैसा देना पडेगा। सोचे, यहाँ पर जितने वृद्द लोग बैठे है। वालजी करसनजी बैठे है शेष दूसरे लोग दिख रहे है। युवक अधिक बैठे है। ये सब बाहर से आये है। ये लोग केन्यावाले है। शेष कंपाला वाले है। हम विचार करे कि भगवद स्वामी को एकबार विचार आया था कि पानी के लिये पैसा खर्च करना पडेगा। आज मुफ्त मे नही मिलता है। बाटली से पानी पीना पडता है। आज से २०-२५ वर्ष पहले यह कल्पना मे भी नही था। यह अधिक समय की बात है। यह १००० वर्ष पहले की बात नही है। विचार करने वाली बात यह है कि अपनी धरोधर सुरक्षित रहे। नही तो चारो तरफ कुपोषण दिखाई दे रहा है। किसी तरफ बाकी नही है। ऐसा नही की आज कल हलाहल कलियुग है। यह पहले भी थी आज भी है। मनुष्य की दृष्टि में बदलाव आ चुका है। सहनशक्ति पर प्रभाव पडा है। आझ से २५ से ३० वर्ष जो मानव का दृष्टिकोण था। आज वह बदल गया है। आज सहनशीलता कम हो गयी है।

महाराजने कहा है कि शास्त्रो द्वारा, कथा-वार्ता करके सत्संग में रहकर पोषण प्राप्त कर सकते है। और मेघपर में आस-पास मंदिर ही है। भाईयो का, बहनो का, ठाकुरजी का मंदिर है। मेघपर बहुत बड़ा गाँव नही लेकिन वैसे बहुत बड़ा गाँव है। जगत मे फैले है इस लिये, वस्तु को जितना बचाकर रखेगे। अपनी धरोहर, अपनी परम्परा अपने सिद्धान्त को बचाकर रखे। और सुखी रहे।

आनंद की बात यह है कि आप सभी सुदूर देश से आये है। और यह गरमी का समय है। रास्ते में बताये थे कि पाटोत्सव को दिसम्बर-दिवाली की बाद रखे। ताली सभी लोग बजाये। ट्रस्टी लोग ध्यान दे। हमारे संत भी ध्यान दे। यह परिवर्तन आवश्यक है। क्यो कि हरिभक्तो को सुविधाजनक हो जाये। छोडकर नही आना पडे। सही बात है न ? छुट्टी रहने पर बच्चे भी साथ मे आ सकते है। और हमारे लिये भी अच्छा होगा। आधा-आधा हो जाता है ।दो भाग में। मैं यह मानता हूँ कि शिखरबद्ध मंदिर हो, महाराजने आदेश दिया हो। ऐसा प्राचीन मंदिर हो उसमे पाटोत्सव का परिवर्तन नही करना चाहिए। इस मे आगे-पीछे नही करे। शेष तो मै मानता हूँ कि जिस दिन मंदिर के सीढी पर चढे वही पूर्णिमा का दिन है। अपने मन की दशा कैसी है ? जिस दिन मंदिर जाने की ईच्छा हो कि मंदिर पर जाये, दर्शन करे तो समझे पूर्णिमा है। न मन कहे तो अमावास्या समझे। सतयुग, द्वापर त्रेता, कलियुग हमारे दिमाग मे होता है। बाहर कुछ भी नही। यह महाराज ने भी कहा है।

लेकिन आज आनंद आया। मेघपर के प्रत्येक संत और हरिभक्त मिलकर ऐसा अच्छा प्रबन्ध किये थे। आस-पास के गाँव के हरिभक्त भी दिखाई दे रहे है। और यह ब्रिज अच्छा बना है। सावधानी से चलना पडता है। वृद्ध को हाथ पकडकर लाये नही तो फिसल जायेगे। लेकिन आनंद आया। मैं तो दूर से देख कर कहता था कि लक्ष्मण झूले की तरह है। सही मे लगता था कि उपर से कोई जानबूझकर हिला रहा हो। मुझे गिराने का प्रयास कर रहा था। लेकिन मैं गिरने वाला नही हूँ। हमको भगवान मिले है। हम तो उपर हिला दे। यह लाईट वे में बात कर रहे है। भगवान जैसे भगवान मिले है। यह आदमी सुरक्षित रहता है। स्वामीने बात किया कि हम सुखी है। क्योकि हमे भगवान मिले है। भगवान की प्रधानता हमेशा अपने मध्य रखे।

अच्छा उत्सव हुआ। आनंद आया कि कंपाला, युगान्डा, केन्या, आस्ट्रेलिया, यु.के. तथा आस-पास के गाँवो के सभी हरिभक्त अपने गाँव के अन्दर अपने हद मे आना है। उप महंत स्वामी ने कहा कि इस प्रकार से मिलकर रहने से गाँव विकास करता है। अपने छोटे-बड़े अवगुणो को समाप्त करे। महाराज हम सभी को शक्ति दे। संस्कार रखे, भगवान को रखे, सभी को धन्यवाद, महाराज आप सभी का भला करे। मंगल करे। ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना।



लक्ष्मीदास जानी का संकल्प पूर्ण किये

– प्रफुल खरसाणी

लुणावाडा के लक्ष्मीदास जानी छपैयापुर की यात्रा के लिये गये थे । वहाँ पर नारायण सरोवर में स्नान करके प्रेम पूर्ण रुप से मंदिर में आये । घनश्याम महाराज का दर्शन करके तीनो मंदिरो में धी दीपक मे डालकर दण्डवत प्रणाम किये थे । और महाराज के सामने हाथ जोडकर बोले कि हे महाराज ! आप को जो वस्तु प्यारी हो कहे । उसी की थाल देना है । लक्ष्मणदास जानी संकल्प करके मूर्ति के सामने हाथ जोडकर खडे हो गये । कुछ समय के बाद देखे घनश्याम महाराज की मूर्ति में से होठ हिलने लगे । उन्होने महाराज की मूर्ति पर ध्यान दिये । वहाँ बालस्वरुप से म ूर्ति मे आभास हुआ कि महाराज की रूचि दहींवडा और् चिरंजपुरी पर है । अर्थात् इसका थाल लगाओ ।

यह जानकर जानी लक्ष्मीदास का तो आनंद की सीमा ही नही रही । स्वयं के उपर भगवान के प्रेम को जानकर कौन नही खुश होगा । अतिशय खुश होकर अपने स्थान पर आये । उन्होने शक्कर की बिरंज दहींवडा इत्यादि थाली में लेकर प्रभु को प्रेम प ूर्वक खिलाये । इसके पश्चात् धर्मकुल के साथ सभी संतजनो को खिलाकर पूजा करके वस्त्र पहनाये । दण्डवत करके रायशरणजीने कहा दादा ! बालपन में जहाँ – जहाँ पर घनश्याम महाराज विचरण किये हो । वह सभी स्थान में देखना चाहता हूँ। कृपा करके आप मेरे साथ आये तो अच्छा रहेगा ।

रामशरणजी ने हाँ कहा दोनो लोग श्रीहरि की बाल लीला का दर्शन करने निकल दिये । नारायण सरोवर स्थल जहाँ पर प्रभु पीपल इमली के उपर खेलते थे । उस स्थान का दर्शन लक्ष्मीदास जानीने किया । धुमते–धुमते दोनो लोग भूतिया कुँवा के उपर तथा वहाँ से पिरोजपुर आये । वहाँ परजापुर तथा लोहगंजरी मे जंगलीनाथ महादेव का दर्शन किये । वहाँ से गौ घाट गये । विश्वामित्री नदी के घाट उपर बाल लीला की बाते रामशरणजीने लक्षअमीदास को सुनाई ।

यह बात सुनकर जानी को लगा कि उस समय पर घनश्याम महाराज कम उम्र के थे । गौ घाट तो छपैयापुरधाम से दूरी पर है । घने जंगल में होते हुए कैसे गाये चराये होगे ?

इस प्रकार विचार करते करते लक्ष्मीदास जानी नहाने के लिये विश्वामित्री के जल मे उतरे । नदी मे उन्होने डूबकी लगायी । तो आश्चर्य चकित हो गये । उन्होने देखा कि बाल स्वरुप घनश्याम महाराज बेनी माधव और् गाँव सभी सखा – गोमती इत्यादि गायो को हाथ में डंडा लेकर चरा रहे थे । जल के अंदर यह क्रिडा देककर लक्ष्मीदास जानी अति आनंदित हुए ।

स्नान करके बाहर आकर उन्होने रामशरणजी से यह बात बतायी । ''आप यह संकल्प देखकर घनश्याम महाराजने आप को इस बात के उपर विश्वास हो दर्शन दिये । बात सुनकर रामशरणजी ने कहा ।

''ऐसा संकल्प कैसा ? लक्ष्मीदास अन्जाने होकर पूछे ।

''निश्चित आप को ऐसा हुआ, छपैयापुर से इतने दूर घोर जंगल में होकर यहाँ तक महाराज और गाये कैसे आती थी ।'' रामशरणजी अर्न्तयामी रुप से जान गये ऐसा उन्होने कहा ।

लक्ष्मीदास जानीने अपने मन मे आये विचार की बात यह सुनकर तुरंत कह दिये । (अवध दिग्विजय मे से आभार के साथ)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वारा से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये
प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से अब
श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन
हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची - मई-२०२६

ता. १०-०५-२०२६ प.भ.श्री धीरूभाई जेरामभाई सोरठीया - बापुनगर।

ता. १७-०५-२०२६ (प्रातः) श्री स्वामिनारायण मंदिर बहेनो का दरबारगढ - मोरबी - प्रे. सांख्ययोगी राजकुंवरबा एवम् सांख्ययोगी उषाबा।

ता. १७-०५-२०२६ (शायं) श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - साबरमती।

ता. २०-०५-२०२६ प.भ.श्री परेशकुमार विनोदभाई पटेल - घाटलोडीया - ह. विनोदभाई टेक्षीवाला।

ता. २२-०५-२०२६ श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - कालुपुर हवेली।

ता. २३-०५-२०२६ श्री भक्ति युवती मंडल - स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज।

ता. २४-०५-२०२६ श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - न्यु राणीप।

ता. २९-०५-२०२६ सत्संग समाज स्वामिनारायण मंदिर चांदखेडा।

ता. ३१-०५-२०२६ (सवारे) सत्संग समाज श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया एवम् श्री नरनारायणदेव युवक मंडल (निलकंठ महादेव)।

ता. ३१-०५-२०२६ (११ बजे) श्री नरनारायणदेव युवक मंडल लुणावाडा।

ता. ३१-०५-२०२६ (शायं) गं.स्व. धर्मिष्ठाबेन चीमनलाल पटेल - कोबा - ह. दिपककुमार पटेल - कोबा

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदायमां એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com



॥भक्तिसुधा॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "खराब स्वभाव के उपर शत्रुता का भाव रखे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

उपवास अर्थात् क्या ? शरीर को भोजन नही देना ? लेकिन हम क्या करते है ? उपवास के पूर्व ही खाने का विचार मन में आ जाता है। खाने का ध्यान नही आये उपवास के दिन विशेष ध्यान देना चाहिए। दूसरा इन्द्रियो को खुराक नही देना ही सत्य उपवास होता है। मन को जो अच्छा लगे भोजन देने पर शरीर बिमार हो जाती है। इसी प्रकार इन्द्रियो को मन पसंद खुराक देने से इन्द्रियाँ बिगड जाती है। इन्द्रियो के बिगड जाने से अपना कल्याणकारी काम रुक जाता है। इसी प्रकार अहंकार से बचना चाहिए। हम जो कार्य करते है तो वह अति उत्तम रुप से हो जाने से अहम पैदा हो जाता है। दूसरे ऐसे नही कर सकते है ऐसा भाव भी अहंकार लाता है। सहन वृत्ति से अहंकार आ जाता है। जो लोग तपस्वी होते है। ऋषि भूमि होते है। साधु-संत होते है। उन्हे अहंकार का ज्ञान होता है। अर्थात् अहंकार करने से जीवन में कैसी कठिनाई आती है। मोक्षमार्ग मे अहंकार कैसे अवरोधक बनता है। यह सब ज्ञान होता है। हम सभी भजन-भक्ति सब करने पर भी अपने अंदर व्याप्त खराब गुणो को दूर करने पर ध्यान न दे तो सब कुछ व्यर्थ हो जाता है।

ग.म. प्र.के. १५ वे वचनामृत में श्रीजी महाराज ने स्वभाव के बारे में बताये है। श्रीजी महाराजने सभी परमहंसो से प्रश्न किये। "कैसा भी स्वभाव हो। यदि एक विचार करे तो उस स्वभाव का नाश हो जाता है। विचार छोडकर हजारो विचार करे तो खराब स्वभाव टलता नही है। ऐसा कौन सा विचार है। जिसे समझ में आये बताये। परमहंसो को समझ आया वह लोग बताये। लेकिन सत्य कोई बता नही सका। बाद में श्रीजी महाराज ने कहा "लीजिये हम बता रहे है। जिस प्रकार किसी का शत्रु बाहर हो। वह अपने कार्य को खराब कर देता है। इस में अभाव आ जाता है। उसे रोकने का प्रयास करते है। कोई दूसरा शत्रु उसका विरोध करे हम अधिक खुश हो जाते है। उसी प्रकार जो मोक्ष के लिये प्रयास करता हो तो उसमें काम क्रोध शत्रु रोक डालते है। तो उसके उपर वैसी ही वैर बुद्धि होती है। इसके चिंता कभी कम नही होती है। ऐसा विचार जहाँ पर आता है। वह विचार मात्र शत्रु को दूर करता है। जब कोई संत काम शत्रु की निंदा करता है तो साधु को अभाव नही आता है। यह साधु तो मेरे शत्रु को मारने का प्रयास करता है। इस लिये यह परम उद्देश्य है। स्वभाव के उपर शत्रुभाव रखना यह सभी विचार में श्रेष्ठ विचार है।

यहाँ पर उपर महाराज वचनामृत में स्वभाव के बारे मे बताये है। अपने खराव विचार को दूर करने के लिये प्रत्न करके दूर करना चाहिए। यह है "शत्रुभाव" बैरबुद्धि किसके साथ रखे ? अपने खराब स्वभाव के प्रति। सामान्य जगत में अपना ऐसा शत्रु जो प्रत्येक कार्य में अवरोध करता हो, अपनी प्रगति रोकता हो, अपना अहित करता हो इसके उपर स्वत) वैर बुद्धि आ जाती है। उसका बुरा होने पर खराब नही लगता है। उसे कोई गाली दे तो अच्छा लगता है। ऐसा लगता है कि यह इसी योग्य है। उसी प्रकार जब हम मोक्ष के लिये प्रयास करते है तो काम, क्रोध, मद शत्रु विघ्न डालते है ? उसके उपर बैर बुद्धि रखे। और जब कोई आपके खराब स्वभाव को पहचान कर कुछ कहे तो अराब नही लगाने। यह शत्रु रुपी मेरा स्वभाव है। उसे बता रहा है। खराव स्वभाव से मेरी सुरक्षा चाहता है। ऐसा सोचने पर अपना खराब स्वभाव समाप्त हो सकता है। खराब स्वभाव अपने विकास को रोकता है। इसके लिये क्या करना चाहिए ? सर्व प्रथम अपने मे व्याप्त दोष को पहचाने। यह प्रथम सीढी है।

"दोष का ज्ञान तो हो जाता है"

(१) अपने अदंर जो दोष है। उसे पहचाने (पहचानने के बाद)

(२) अपने अंदर का दोष मोक्षमार्ग मे कैसे बाधक है। वह सोच कर ध्यान दे।

(३) जब जब दोष दिखायी दे । तो हृदय से पश्चाताप करे । पुनः न करे दृढ निश्चय बने ।

(४) कोई हमारा दोष बताये तो रक्षा नही करे ।

इस प्रकार प्रयत्न करके दोष को दूर कर देना चाहिए ।

अपना दोष देखने से कर्म से छूट जाते है । अपना दोष दिखाई दे तो समझे जागृत हो गया है कि अब मोक्ष लायक हो गये है । प्रकृति (स्वभाव) मोक्ष की तरफ सत्य मे प्रयाण है । सामान्य संसार मे देखे तो लोगो को अपना दोष नही दिखायी देता है । कोई दोष बताये तो अच्छा नही लगता है । हमे ऐसा नही करना है । महाराजने वचनामृत में बताये है अपने खराब स्वभाव के प्रति बैर भाव रखे निष्काम भाव से जीवन मे शुद्ध रहे । समर्पण का भाव रखे । श्रद्धा बनाये रखे । भगवान को जानने का प्रयास करते रहना चाहिए। यह जगत मायारुपी है । माया का प्रभाव तो पडेगा । हम सभी गृहस्थ है । इस लिये माया से सावधान रहना चाहिए। कोई जान बूझकर नही करता है । तो मायारुपी संसार में फँस जाता है । इस लिये लगातार जागृति रखनी चाहिए । नटरस्सी के उपर चलता है । तो सावधानी रखता है । दाये-बाँये तरफ समान रुप से रख से पर चलता है । अपने उपर संतुलन रखता है । नजर मात्र लक्ष्य के उपर रखता है । दाये-बाये जाने पर गिर जायेगा । इश लिये अपनी नजर अपने लक्ष्य के उफर रखे । अपना 'कल्याण' बिगडे नही इस पर ध्यान देना चाहिए । संसार से विरक्त भी नही होना है । और जगत के प्रति अधिक आसक्त भी नही होना चाहिए । विरक्त होने पर परिवार पर प्रभाव पडता है । परिवार अपनी जिम्मेदारी है । कर्म का पालन करे । दोनो तरफ बैलेन्स बनाकर रखे । लेकिन हम क्या करते है । संसार प्यारा लगता है । चीटी की तरह संसार में लिप्त रहते है । चीटी चीनी के पात्र में बैठ जाती है । उन्हे निकालने के लिये धूप में रखना पडता है । हम सभी उस चीटी के समान है जो डिब्बे से निकलना नही चाहती है । जब भगवान द्वारा ज्ञान रुपी धुप मिलती है । तो वह उसमें से निकलता है । महाराज से प्रार्थना करे मैं अपने खराब स्वभाव को जानता हूँ । उसे निकाले तथा शत्रु भाव भी रखे । मेरी सहायता करे । सम्पूर्ण शरणागति स्वीकार करना है । ऐसा बन जाये कि अपनी कोई स्वतंत्र सत्ता ही नही रहे । नरनारायणदेव से यही प्रार्थना करे के सदा साथ रहे ।

●

परोपकार

- सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

प्रतिदिन व्यवहार में आने वाली परोपकार शब्द पर विचार करने जैसा है । परोपकार अर्थात् किसी भी प्रकार की अपेक्षा से किया गया कार्य परोपकार होता है । पिता-पुत्र को पढाता है तो उसका वह फर्ज है । परोपकार नही है । लेकिन गरीब-निराधार बच्चे को बिना अपेक्षा के पढाना यह परोपकार है । परोपकार सज्जनो का आभूषण होता है ।

धर्मशास्त्र में परोपकार का अधिक महत्व बताया गया है । परोपकार के समान कोई दूसरा धर्म नही है । परोपकार से पुण्य एकत्र होता है । नीतिशतक मे भतृहरिने कहा है कि शरीर की सच्ची शोभा परोपकार है । जो परोपकार नही करता है । उसका जन्म बकरी के गले में लटकते स्तन की तरह बेकार है । वृक्ष अपने उपर अपकार करके परोपकार करते है । वृक्ष पत्थर मारने वाले को भी फल देता है । तथा कुल्हाडी से काटने वाले को छाया प्रदान करता है । उसी प्रकार सत्पुरुष परोपकारी होते है । उन्हे सम्मान मिले या नही मिले परोपकार करते रहते है ।

एक बार एक बिच्छू पानी में डूब रहा था । बाहर निकलने के लिये अथक प्रयास कर रहा था । फिर भी बाहर नही आ पाया था । नदी में स्नान करने आये एक संत यह घटना देख रहे थे । वह नदी में उतर कर बिच्छू की बाहर लाये । पुनः बिच्छु पानी में गिर गया । फिर संत ने बिच्छू को बाहर निकाला उसने फिर संत को डंक मार दिया । यह क्रिया तीन चार बार हुई । लेकिन संत बिच्छू को बहने नही दिया । उसे बचाया । फिर उन्हे जहर से मूर्छा आ गयी । कुछ समय के बाद संत उठे । यह दृश्य एक भाई देख रहा था । उसे लगा कि यह कोई महामूर्ख है । फिर भी आकर संत से पूछा कि बिच्छू के डंक मारने के बाद भी उसे क्यो बचाये ? तब संत ने उत्तर दिया कि यदि बिच्छू अपने बुराई नहीं छोड रहा है तो हम सज्जनता कैसे छोड दे । यह सुनकर आदमी संत के चरणो में गिर पडा ।

कितनी बडी आपत्ति आ जाये फिर भी सज्जन व्यक्ति अपनी सज्जनता नही छोडता है । सज्जन व्यक्ति ईश्वर ने परोपकार के लिये बनाये है । अठ्ठारह पुराणो के रचयिता व्यास मुनि कहते है कि "परोपकाराय पुण्याय पावाय परपींडुनम्" परोपकार के समान कोई पुण्य नही है । दूसरे को दुख देने के समान कोई पाप नही है । लगभग सभी धर्म सम्प्रदाय का

आदर्श परोपकार ही है।

भक्त कवि नरसिंह मेहता की एक प्रसिद्ध भजन है कि ''वैष्णवजन तो तेने कहिये जे पीड पराई जाणे रे, परदुखे उपकार करे तोय मन अभिमान न आणे रे'' परोकार करने के बाद भी जिसे अहंकार नही आये वही सच्चा वैष्णव है। भक्त भी है। वर्षो बीत जाने के बाद भी आज राजा दिलीप और अशोक को याद करते है क्यो ? क्योकि ये लोग परोपकारी जीवन व्यतीत करके गये थे। धूप बत्ती स्वयं जलकर दूसरे को सुंगध देता है। उसी प्रकार स्जजन पुरुष स्वयं कष्ट उठाकर अन्य को सुखी रखते है। परोपकारी जीवन जीये वही अच्छा जीवन होता है। अपने परिवार का पालन तो पशु-पक्षी भी करते है। भगवान ने मानव देह उपर पूर्ति के लिये ही नही दिये है। जो भोजन के लिये जीते है। उनका जीवन पशु समान ही होती है। मनुष्य शरीर की सार्थकता परोपकार मे ही है। परोपकार नही कर सके तो अपकार नही करना चाहिए।

नीति शतक लिखने वाले भर्तृहरि कहते है कि कुछ लोग अपनी क्षति करके भी परोपकार करते है। वे उत्तम भक्त होते है। कुछ लोग स्वार्ध साथ करके परोपकार करते है। ये मध्यम प्रकार के भक्त होते है। कुछ लोग स्वार्थ पूरा करते है। वे परोपकार नही करते है। वे कनिष्ठ प्रकार के भक्त होते है। विश्व के सभी महापुरुषो ने परोपकार की महिमा बताये है। परोपकार करते समय देश काल एवम् पात्र का विवेक रखना चाहिए। नही तो कई बार परोपकार के स्थान पर अपकार कर देते है। जैसे किसी चोर की हथियार की आवश्यकता हो और उसे हम हथियार दे तो परोपकार का परिणाम क्या होगा ? परोपकार सज्जन का आभूषण है। इससे सज्जन की शोभा बढ जाती है।

●

गर्व गंजन घनश्याम महाराज

– कंचनबेन बाबुभाई अडालजा (रतनपर)

एक दिन मकर संक्रांति होने के कारण श्री धर्मदेव ने विचार किया आज मकर संक्रांति का दिन होने के कारण ठंडे पानी से स्नान करना चाहिए। वैसे तो पूरे मास ठंडे पानी से नहाना चाहिए। ऐसा सोचकर मोती तिवारी तथा रामप्रताप और श्री घनश्यामभाई को लेकर नारायण सरोवर गये। और स्नान करके पीछे घर आये। और ब्राह्मणो को दान दिये विप्रो और साधु लोगो की भोजन कराके संतुष्ट किये। सभी छपैया वासियो ने श्रद्धा अनुसार दान-पुण्य किये। उस समय पृथ्वी माता गाय का रुप धारण करके धर्मदेव के घर घनश्याम के पास आये। उन्होने धुधरी तथा हलुवा गाय के पास रखे। तथा वे प्रेम से गाय को सहलाने लगे। उस समय गौमाता रोने लगी। तब घनश्याम महाराजने कहा ''हे गाय माताजी क्यो रो रही है ? हमको सही बताये ? गाय रुप में प्रगट पृथ्वी माता बोली ''हे दीनदयाल, हे भगवान, मैं गाय का रुप धारण करके आप के पास आयी हूँ। आफ गर्वजन है। आप से आग्रह करती हूँ कि हमारे उपर अधिक पाप हो रहा है। पाप रुपी भार हल्का करे। तथा धर्म की स्थापना करे। इस लिये आप का अवतार हुआ है।

गौ माता इस प्रकार बता रही थी। वहाँ पर वरुणदेव प्रगट हो गये। गद्‌गद् कंठ से मधुर वाणी में श्रीहरि की प्रार्थना करके बोले ''हे कृपासिंधु, हे घनश्याम प्रभु मेरा दुःख दूर करे। ईटोला गाँव में तालाब में कई लोग मछली तथा अन्य जीवो को मारते है। इन पापियो का आप नाश करे। इत तालाब के किनरे पर कई बडे मगर मछली, जलचर मरे पडे है। इस लिये दुःखी होकर कह रहा हूँ। हे हरि, हे कृष्ण इन दुष्टो से सबकी रक्षा करे।

वरुण देव की इस प्रकार की बात सुकनर दीन दयालु श्री गनश्याम महाराज के दिल में अपार दया आयी। तथा गौ माता एवम् वरुण देव से उन्होने कहा ''आप डरे नहि'' आप दोनो अपने स्थान पर प्रत्यक्ष प्रभु का ध्यान देना। कुछ दिन के बाद आप के कष्ट को दूर करुँगा। तथा एकान्तिक धर्म की स्थापना करुँगा। तभी मुझे शांति मिलेगी। कुछ दिन के बाद मे मैं वन मे जाऊँगा। वहाँ पर कई जीवो का कल्याण करुँगा।

घनश्याम महाराज की आज्ञा लेकर गौ माता स्वरुप पृथ्वी माता तथा वरुणदेव ने बिदाई ली।

श्री घनश्याम दूसरे रुप में ईटोला गांव में गये। वहाँ पर तालाब के किनरे मरे पडी जीवो के उपर नजर डाली सभी जीवित होकर तालाब में चले गये। सभी मछुवारे आपस में दोषारोपण करके अंदरो अंदर झगडा करने लगे। देखे महाराज ने कैसा अद्‌भुत कार्य किये। प्रभु की माया का कोई पार नही पा सकता है। इस प्रकार श्री घनश्याम महाराज के आगे पृथ्वी माता तथा वरुणदेव ने मकर संक्रांति के दिन स्तुति किये। तथा संकल्प पूर्ति हो गया।

●

महुधा के ब्राह्मण का ब्रह्म राक्षस दूर किये

– पल्लवीबेन विजयकुमार (लांघणज)

एक दिन भगवान की सभा हुई । उस समय महुधा का ब्रह्म राक्षस लगा था । वह ब्राह्मण सभा में आया । वह ब्रह्म राक्षस बना ब्राह्मण पढा था । वह देवलऋषि के शाप से ब्रह्म राक्षस बन गया था । वह ब्रह्म राक्षस श्लोक बोलने लगा । तब महाराज बोले कौन श्लोक बोल रहा है । तभी उसके सम्बन्धी ने कहा उसके अन्दर प्रवेशित ब्रह्म राक्षस बोल रहा है । महाराज बोले मेरे पास लाये । उसे लाया भी गया । वह ऊचे शब्दो में भागवत का श्लको बोलने लगा । इसके बाद श्रीहरिने नजर डाली तब वह बोलना बंद कर दिया । महाराजने कहा तुम कौन हो ? वह कहा आप से क्या मतलब है ? महाराज ने कहा इसमें से निकल जाओ । तब ब्रह्म राक्षस ने कहा ! यह कहाँ आप का सत्संगी है । महाराजने कहा मै इसे अपना सत्संगि बनाउगा । अंजलि में जल लेकर भूतवाले को वर्तमान का आभास कराये । इसमें से निकल जा । ब्रह्म राक्षस ने कहा कि निकल कर मै कहाँ जाऊ । महाराजने कहा सन्यासी देवानंद के शरीर में जाओ । यदि मैं उस में गया तो जल जाऊँगा । महाराजने कहा मेरे मे आओ या परमहंसो मे जाओ । वह बोला वहाँ तो जल कर समाप्त हो जाऊगा । महाराजनेक हा वट वृक्ष में जायेगे । उसने कहा वट में भूत रहता है वह शहर में भ्रमण करने गया है । जहाँ पर ऐसी संत का मिलन हो वहाँ में कैसे रह सकता हूँ । महाराजने कहाँ तुम्हे कहाँ पर रहना है । तब उसने कहा कि आप के स्वरुप में जिसे पूरा विश्वास नही हो । ऐसी महिलाओ में जाकर रहूँ । महाराजने कहा आप सभी बहने इसकी बात को सुने । यह भूत आप सभी में प्रवेश करने को कह रहा है । जो मुझे वर्तमान मे नही मानता हो उसमें भूत जाये । बहने बोली हम लोग आप का ध्यान करेगे । कृपया ब्रह्म राक्षस हमारे पास नही भेजे ।

बाद में श्रीहरि हाथ मे जल लेकर जो ब्रह्म राक्षस ब्राह्मण में प्रवेश किया था । उसे देवल के श्राप से मुक्त किये । उस ब्राह्मण ने महाराज का चरण छाती पर रखा । और बोला महाराज मे वेदो को पढकर ब्रह्म ज्ञानी हो गया था । मेरे गुरु देवल मुनिने पास बुलाये तथा सामने बोलने लगा । गुरुजी तो दयालु थे । लेकिन ब्रह्म ज्ञान से मुझे गर्व हो गया था । गुरुजी समझाये फिर भी गर्व गया नही । एक दिन गुरुजी ने श्राप दिया कि ब्रह्म राक्षस बन जाओ । देवल ऋषि भगवान का ध्यान करके बोले कि कलियुग मे स्वामिनारायण का मिलन होगा । तथा मेरे श्राप से मुक्त हो जायेगा । तथा मोक्ष को प्राप्त करेगा । बाद में महाराजने कहा कि नरनारयणदेव जहाँ तपस्या कर रहे है । उस बद्रिकाश्रम मे जाये । महाराज का चरण पकड थोडे समय के बाद अदृश्य हो गया ।

श्री नरनारायणदेव देश के आगामी उत्सव

दूसरा ज्येष्ठ सुद-२ मंगलवार ता. १६-६-२०२६ को प्रांतिज मंदिर का पाटोत्सव ।

दूसरा ज्येष्ठ सुद-५ शुक्रवार ता. १९-६-२०२६ वाली (राज.) मंदिर का पाटोत्सव ।

दूसरा ज्येष्ठ सुद-१० बुधवार ता. २४-६-२०२६ श्रीहरिने स्वतंत्र रुप से स्वधाम गमन किये थे ।

दूसरा ज्येष्ठ सुद-११ गुरुवार ता. २५-६-२०२६ निर्जला एकादशी उपवास, सर्वोपरि छपैयाधाम मंदिर पाटोत्सव, आदि आचार्य प.पू. श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का प्रगटोत्सव ।

दूसरा ज्येष्ठ सुद-१४ रविवार ता. २८-६-२०२६ ठाकोरजी का केसर स्नान ।

दूसरा ज्येष्ठ सुद-१५ सोमवार ता. २९-६-२०२६ मुकुटोत्सव पूनम ।

दूसरा ज्येष्ठ वद-१२ शनिवार ता. ११-७-२०२६ योगीनी एकादशी उपवास, वडनगर मंदिर पाटोत्सव ।

अषाढ सुद-२ गुरुवार ता. १६-७-२०२६ श्री जगन्नाथजी भगवान की रथयात्रा ।

अषाढ सुद-३/४ शुक्रवार ता. १७-७-२०२६ अयोध्या श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव ।

अषाढ सुद-२ गुरुवार ता. १६-७-२०२६ श्री जगन्नाथजी भगवान की रथयात्रा ।

अषाढ सुद-३/४ शुक्रवार ता. १७-७-२०२६ अयोध्या श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव ।

सत्संग समाचार

विश्वका सर्व प्रथम कालुपुर अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन से अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायण भगवान के सानिध्य में वैशाख वद-४ ता. ६-५-२०२६ से वैशाख वद-८ ता. १०-५-२०२६ तक श्रीमद् भागत पंचान्ह पारायण प.भ.अ.नि. जसुबेन देवसी राबडिया परिवार गाँव सुखपर कच्छ के यजमान पद से पूर्ण की गयी। जिस के वक्ता स.गु. शास्त्री स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी (कांकरिया महंतश्री) संगीतमय वातावरण में कथामृत का पान कराये थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री यजमान परिवार के उपर खुश होकर आशीर्वाद दिये थे। पू. महंत स्वामी के संत मंडल ने अच्छी व्यवस्था की थी।(कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

विश्वका सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में अधिक मास के अवसर पर श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव और पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन से विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायण भगवान के सानिध्य में अधिक पुरुषोत्तम मास के वैशाख वद-१४/१४ ता. १५-५-२०२६ से अधिक ज्यष्ठ सुद-३ ता. १९-५-२०२६ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण स.गु.शा. स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल-जमीयतपुरा महंतश्री) के वक्ता पद से प्रसादी के सभा मंडप में पूर्ण की गयी।

ता. १७-५-२०२६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके सभा में विराजकर कथामृत का पान करके यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये। अधिक ज्येष्ठ सुद-३ के दिन परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान का षोडशोपचार महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूर्ण किया गया।

प्रसंगोचित सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री का पाटोत्सव और पारायण के यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये। धामो-धाम से पधारे संत और महंत स्वामीने सोनी महाजन सत्संग का स्वागत करके आशीर्वाद दिये।

महंत स्वामी के संड मंडल ने अच्छा प्रबन्ध किये थे। श्री नरनारायणदेव की अन्नकूट आरती प.पू. बड़े महाराजश्री ने किया था । सभा का सुंदर संचालन साधु दिव्यस्वरुपदासजीने किया था।

यजमान परिवार अ.नि. अमृतलाल जगजीवनदास पटनी, अ.नि. कांताबेन अमृतलाल पटनी (वढवाणवाले), प.भ. नवीनभाई ए. पटनी, उषाबेन एन. पटणी, डॉ. घनश्याम पटनी, अ.सौ. निरंजनाबेन जी. पटणी, आदि परिवारने अलौकिक लाभ उठाया था। (कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्म शक्ति पार्क-नवा नरोडा २८ वे वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा कर्म शक्ति मंदिर सत्संग समाज के प्रबन्ध से प.भ. श्री विनोदभाई धनजीभाई पटेल (मणीपुरवाले) के मुख्य यजमान पद से मंदिर का २८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. २६-४-२०२६ के दिन उल्लास पूर्वक मनाया गया था।

पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ठाकुरजी के चलस्वरुप का

अभिषेक समूह महापूजा, तीन घंटे की धुन, अन्नकूट तथा भक्तगणो के लिये महाप्रसाद की अच्छी व्यवस्था थी । ता. २८-४-२२६ के दिन बाल मंडल का रात्रि कालीन सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रेरणादायक था । बालमंडल के कोर्डिनेटस तथा सभा के संचालको के अथक प्रयास से शिक्षापत्री में लिखे सदाचार रुपी धर्म को उजागर करता है। संस्कार प्रेरक, खेल और हास्य रस के साथ ज्ञानवर्धक, समाज सेवा प्रेरक वातो पर प्रकाश डाला गया था। बच्चियो के नाटक, संवाद, रासोत्सव, नृत्य, कला, कौशल्य जैसी विविध कार्यक्रम अच्छे रुप से पूर्ण किये गये। बाल सभा के माध्यम से बच्चो मे आये संस्कारो की वृद्धि के विषय में संरक्षकोने विचार रखे थे। कार्यक्रम देखने वाले लोग बच्चो पर अति खुश हुए। तथा छोटी-बडी आर्थिक सहायता भी दिये । प्रत्येक बच्चो को प्रोत्साहक पुरस्कार देकर उनका उत्साह वर्धन किया गया था।

इस अवसर पर कालुपुर मंदिर से पू. महंत स्वामी के प्रतिनिधि के रुप में उनके शिष्य शा. स्वामी दिव्यस्वरुपदासजी पधारे थे । तथा अवसर पर आशीर्वाद दिये थे।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

विश्वका सर्व प्रथम कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में अधिक मास के अवसर पर श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन से विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में अधिक पुरुषोत्तम (ज्येष्ठ) माह में प्रसादी के सभा मंडप मे श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण अधिक ज्येष्ठ वद-२ ता. ४-६-२०२६ से अधिक ज्येष्ठ वद-८ ता. ८-६-२०२६ तक स.गु. शा. स्वा. सत्यसंकल्पदासजी (नाराणघाट महंतश्री) के वक्ता पद से पूर्ण की गयी। जिसके यजमान अ.नि.प.भ. बाबुलाल मगनलाल सोनी, अ.नि.प.भ. हंसाबेन बाबुलाल सोनी परिवार ने लाभ लेकर धन्यता अनुभव किये । महंत स्वामी के संत मंडलने सुंदर प्रबन्ध किया था । धर्मकुल पधारकर सभी को आशीर्वाद दिये थे। सभा का संचालन साधु दिव्यस्वरुपदासजीने किया था । (कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

विश्वका सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में नियमित होने वाली पूनम की सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में पिछले कई वर्षो से प्रत्येक पूनम को प्रातः ८-३० से १०-३० तक प्रसादी के सभा मंडप में सत्संग सभा का सुंदर प्रबन्ध होता है। गाँव-गाँव से और शहर के हरिभक्त सत्संग का लाभ लेने आते है। ता. १-५-२०२६ वैशाख सुद पूनम की सत्संग सभा के वक्ता शा. स्वा. अखंडस्वरुपदासजी ने कथा का अमृतपान कराया था । अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभा को आशीर्वाद दिया था । सभा का सुंदर संचालन साधु दिव्यस्वरुपदासने किया था।(कोठारी स्वामी - कालुपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रसादीधाम पाटण

महिला सत्संग सभा : प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के आज्ञा आशीर्वाद से ता. १०-५-२०२६ को शायं ४ से ७ तक अपने बहनो के मंदिर में सत्संग सभा की गयी थी । इस अवसर पर ऊँझा मंदिर की सांख्ययोगी वनीताबा और हंसाबाने कथा करके सभी को लाभ दी।

ता. १२-४-२०२६ के दिन नूतन मंदिर का प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा अच्छे से पूर्ण किया गया था। इस अवसर पर जनमंगल होमात्मक पाठ किया गया था।

बाल सभा : प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-प्रेरणा से ता. १०-५-२०२६ के दिन १० वी बाल सभा की गयी थी। इस धार्मिक परीक्षा में ३५ बच्चो ने भाग लिया था । पर्ण-२ पुरस्तक को बच्चो में बांटा गया था। अधिक मास

के कारण मंदिर में धुन-भजन, कीर्तन पाठ का कार्यक्रम रखा गया था।(प्रकाशभाई सोनी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विराटनगर (ओढव) का ५२ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर विराटनगर का ५२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. ७-४-२०२६ के दिन सभी हरिभक्तो के साथ मिलकर बनाया गया था।

प्रातः ६-३० से ७ तक ठाकुरजी का अभिषेक, दोपहर २ बजे ३० मिनटर अखंड महामंत्र की धुन रखी गयी थी। अपने कालुपुर मंदिर से सांख्योगी भगवतीबा, सांख्ययोगी गीताबा आदि बहने पधारकर कथा-वार्ता का लाभ दी थी। ठाकुरजी के लिये सुंदर अन्नकूट की व्यवस्था की गयी थी। (नानीबेन)

रामोल जामफलवाडी श्री स्वामिनारायण मंदिर पुनः मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर रामोल जामफलवाडी की पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर त्रिदिवसीय रात्रीय कथा स.गु. शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी (कांकरिया महंतश्री) के वक्ता पद से पूर्ण की गयी थी।

ता. १०-५-२०२६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी की पुनः मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा विधिवत रुप से पूर्ण की गयी। सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी और धामो-धाम से पधारे संतो की प्रेरकवाणी के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद दिया था। सभा का संचालन साधु दिव्यस्वरुपदासजी ने किया था।(कोठारी स्वामी कालुपुर)

गुनमा गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर का रजत जयंती महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर के महंतश्री) के मार्गदर्शन से गुनमा (ता. माणसा) श्री स्वामिनारायण मंदिर के रजत जयंती पाटोत्सव ता. ६-५-२०२६ से ता. १०-५-२०२६ तक उल्लासपूर्वक मनाया जायेगा। जिसके उपलक्ष्य में पाँच दिन का कथा पारायण किया जायेगा। १०-५-२०२६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी की आरती की गयी थी। गाँव के सभी हरिभक्त ने सुंदर लाभ उठाया ता। प्रसंगोचित सभा में पू. महंत स्वामी तथा धामो-धाम से आये संतो की प्रेरकवाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद दिया था। सभा का संचालन महंत स्वामी के शिष्य साधु दिव्यस्वरुपदास ने किया था।(राजूभाई चौधरी)

लिंबोदरा गाँव में सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से विश्व के लिम्बोदरा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर के रजत जयंती महोत्सव के अवसर पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी थी। सर्व प्रथम ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा मे बहनो को आशीर्वाद दी थी। (विनुभाई गौस्वामी - लिम्बोदरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी का ८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से प.भ. श्री दासभाई की प्रेरणा से ता. २४-५-२०२६ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर का ८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव प.भ. श्री रसिकभाई एस. काछडिया के मुख्य यजमान पद से उल्लास पूर्वक मनाया गया था।

पाटोत्सव के अर्न्तगत समूह महापूजा, अन्नकूट और प्रासंगिक सभा का आयोजन था। सभा ने कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी के प्रतिनिधि स्वरुप आये पू. बालु स्वामी तथा शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (महंतश्री नारायणघाट मंदिर) तथा एप्रोच मंदिर के महंत शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी आदि संत पधारकर आशीर्वाद दिये थे। कालुपुर मंदिर से आये पू. सांख्ययोगी बहनोने अन्नकूट का दर्शन करके बहनो को आशीर्वाद दी थी।

भक्तगणो के लिये भोजन प्रसाद की सुंदर व्यवस्था की गयी थी।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सादरा-वासणा का १० वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा तथा महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छी व्यवस्था से ता. २२-४-२०२६ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर सादरा-वासणा मे बिराजमान देवो का १० वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर जेतलपुरधाम से स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, बावला से स.गु.शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी, स.गु. ब्र. के.पी. स्वामी आदि संतो ने पधारकर सत्संग कथा-वार्ता का लाभ दिये थे।(जनमंगल स्वामी - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर राबडिया का १५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा तथा महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छी व्यवस्था से ता. २५-४-२०२६ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर राबडिया में बिराजमान देवो का १५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर जेतलपुरधाम से स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम महंतश्री), स.गु. शा. स्वा. धर्मनंदनदासजी (बापुनगर महंतश्री), शा. स्वामी अक्षरप्रियदासजी, स्वामी जनमंगलदासजी आदि संत पधारकरके सत्संग कथा-वार्ता का लाभ दिये थे। गाँव तथा बाहर के भक्त अन्नकूट का दर्शन करके खुश हुए थे। (जनमंगल स्वामी - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटप का १६३ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. २१-४-२०२६ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटप गाँव में बिराजमान देवो का १६३ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर जेतलपुरधाम से स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, मेहसाणा से स.गु. नारायणप्रसाददासजी, बिलिया से स.गु. चंद्रप्रकाशदासजी, अक्षरप्रियदासजी आदि संत पधारकर सत्संग कथा-वार्ता का लाभ दिये थे। गाँव के कालुपुर मंदिर के ट्रस्टीश्री गणपतभाई जी. पटेल साहेबने अच्छी व्यवस्था किये थे।। सभी लोग सत्संग का लाभ लेकर खुश हुए थे। (जनमंगल स्वामी - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेराना-मुवाडा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा तथा महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छी व्यवस्था से ता. ३०-४-२०२६ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर मेराना मुवाडा में बिराजमान देवो का पाटोत्सव अच्छे से मनाया गता था। इस अवसर पर जेतलपुरधाम से स.गु. शा. स्वा.

पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, अक्षर स्वामी, जनमंगल स्वामी आदि संत पधारकर सत्संग कथा-वार्ता का लाभ दिये थे। कोठंबा की बहनोने अन्नकूट की सेवा दी थी। (जनमंगल स्वामी - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गामडी का १९७ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा तथा महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छी व्यवस्था से ता. १-५-२०२६ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर गामडी में बिराजमान देवो का १९७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस मे जेतलपुरधाम से स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. श्यामचरणदासजी, स.गु. ब्र. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी (कालुपुर मंदिर के ट्रस्टीश्री), मकनसर मंदरि के महंत स्वामी हरिप्रकासदासजी, बापुगनर मंदिर के महंत स्वामी धर्मनंदनदासजी आदि संत पधारकर सत्संग कथा-वार्ता का लाभ दिये थे। गाँव के भक्त अभिषेक दर्शन करके धन्य हुए। (जनमंगल स्वामी - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवागाम (कपडवंज) का १६ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा तथा महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छी व्यवस्था से ता. ७-५-२०२६ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर नवागाम में बिराजमान देवो का १६ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर जेतलपुरधाम से स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी, स.गु. ब्र. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी (कालुपुर मंदिर के ट्रस्टीश्री), स.गु. महंत स्वामी हरिप्रकाशदासजी (मकनसर) आदि संत पधारे थे। जेतलपुर संस्कृत महाविद्यालय द्वारा भूदेवोने पूजा की थी। गांव के भक्त अभिषेक-अन्नकूट का दर्शन किये थे। संतो ने कथा-वार्ता का लाभ दिये थे। (जनमंगल स्वामी - जेतलपुर)

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

Information for foregin donation towards Shree Narnarayan Mandir Trust for all Satsangi, who are belongs to abroad (out side India) remit their donation to Shree Narnarayan Mandir Trust, Kalupur, Ahmedabad. Only in Our FCRA A/c. Details as under.

BANK NAME	:	**STATE BANK OF INDIA**
BRANCH	:	**FCRA CELL, MAIN BRANCH, SANSAD MARG, NEW DELHI-110001**
BENEFICIARY NAME	:	**SHREE NARNARAYAN MANDIR TRUST**
SAVING BANK A/C. NO.	:	**401 890 15898**
IFS CODE	:	**SBIN0000691**
SWIFT CODE	:	**SBININBB104**
BENEFICIARY ADDREES	:	**SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE, KALUPUR, AHMEDABAD, GUJARAT, INDIA**

Special instruction for remittance made through NRE Cheque in Indian Rs.-

If any donation route from abroad to NRE A/c in India (of Donor), please donate with your cheque along with copy of passport of related donor, Only afterwards their donation will be credited in above mentioned A/c only.

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

चैत्र सुद-२ प.भ. हर्ष कल्पेशकुमार पटेल (कडी), अ.नि. यशवंतभाई बेचरभाई पटेल (अहमदाबाद) । **चैत्र सुद-३** प.भ. छेलाजी अनाजी चौधरी (दांतीवास-राज.) । **चैत्र सुद-४** प.भ. हरिकृष्णभाई नाथालाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. नवनीतभाई नारणभाई मांगरोलीया (अहमदाबाद), अ.नि. स.गु. शा. स्वामी भक्तिजीवनदासजीना स्मरणार्थे (गुंदाला) । **चैत्र सुद-५** श्रीजी एन्कलेव (अहमदाबाद), प.भ. घनश्यामभाई शीवाभाई पटेल (खंडेरावपुरा), अ.नि. केशरा मावजी (मांडवी-कच्छ), प.भ. किआन बिन्देशभाई पटेल जन्म दिने (गांधीनगर) । **चैत्र सुद-६** प.भ. अमरबाई लालजी हालाई (मांडवी-कच्छ) । **चैत्र सुद-७** प.भ. माधवलाल मगनदास पटेल (अहमदाबाद), प.भ. पूर्विकाबेन पटेल (जासलपुर), प.भ. हर्षाबेन तनुभाई बवाडीया (सुरत) । **चैत्र सुद-८** अ.नि. पू. स.गु. स्वामी कृष्णप्रसाददासजी - राबडीया किशोरभाई मावजी (भुज मंदिर), श्रीहरि प्रभुनी २४५ मी जयंती निमित्ते स.गु. शा. स्वा. ज्ञानजीवनदासजी (कुंडल) । **चैत्र सुद-९** प.भ. अरविंदभाई चौधरी (ईश्वरपुरा) । **चैत्र सुद-१०** प.भ. घनश्यामभाई करशनभाई चावडा (रामपरा), प.भ. मधुबेन जगदीशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. संदिपभाई दशरथभाई पटेल, प.भ. रमीलाबेन अंबालालभाई पटेल (मोखासण), प.भ. गीताबेन जगदीशभाई पटेल, प.भ. अ.नि. वाघजीभाई माधवदास पटेल, प.भ. अ.नि. काशीबेन वि. पटेल, प.भ. अ.नि. कालुभाई विठ्ठलभाई विरसदीया (अहमदाबाद) । **चैत्र सुद-११** प.भ. कमला दिपकभाई हिराणी (भुज-कच्छ) । **चैत्र सुद-१२** प.भ. निरव चंद्रकान्त भावसार (अहमदाबाद), प.भ. चेतनाबेन कल्पेशभाई (सोलंकी), प.भ. अ.नि. अरविंद वाघजी हिराणी (मिरजापर-कच्छ), प.भ. सुनिताबेन परेशकुमार पटेल (वडु), प.भ. अशोकभाई जोईताराम पटेल (डांगरवा), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारणपर-कच्छ), प.भ. ज्योत्सनाबेन दिनेशभाई राव (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. विसराम रामजी वेकरीया (रामपर-वेकरा-कच्छ), प.भ. रवजी करशन केराई (रामपर-वेकरा-कच्छ), प.भ. शैलेषभाई भावसार (अहमदाबाद) । **चैत्र सुद-१३** प.भ. फेनी घनश्यामभाई पटेल जन्म दिने (ईसंड) । **चैत्र सुद-१४** प.भ. अनंत जे. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अल्काबेन जयेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. नरसिंहभाई नथुभाई टीलवा (वंथली), प.भ. वनीशा कांतिभाई हालाई (केरा-कच्छ) । **चैत्र सुद-१५** प.भ. प्रियंकाबेन निसर्गभाई पटेल (मोखासण).

चैत्र वद-१ प.भ. देवेन्द्रभाई झवेरलाल पडीया (अहमदाबाद), प.भ. दिलीपभाई व्रजलालभाई परीख (अहमदाबाद), प.भ. कृष्णकुमार वाडीलाल पटेल (अहमदाबाद) । **चैत्र वद-२** प.भ. अ.नि. नंदलालभाई भाईचंदभाई कोठारी (अहमदाबाद), प.भ. नविनचंद्र गफुरभाई पटेल (खंभात), प.भ. देवसीभाई मूलजीभाई हालाई (कच्छ-भुज) । **चैत्र वद-३** प.भ. जगदीशभाई तुलसीभाई चावडा (सुरत), गं.स्व. चंपाबेन भनुभाई सुहागीया (अहमदाबाद), प.भ. कांतिभाई सी. पटेल (मोटेरा), प.भ. रामुबेन घनश्यामभाई पटेल (मेडा), प.भ. अ.नि. मनजी कानजी गोरसीया (मानकुवा-कच्छ), प.भ. प्रेमजीभाई भगवानभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. रतनबाई केसरा धनजी भुडीया (फोटडी-कच्छ) । **चैत्र वद-४** प.भ. निरजभाई पियुषचंद्र जोशी (वडोदरा), प.भ. पृथ्वी रोमीलभाई पटेल जन्म दिने (सोजा) । **चैत्र वद-५** अजुबेन परेशकुमार चौधरी (भीमपुरा) । **चैत्र वद-६** प.भ. महाथी काछडीया (निकोल), प.भ. अ.नि. ईन्दुभाई जे. पटेल (अहमदाबाद) । **चैत्र वद-७** प.भ. अ.नि. दिनेशचंद्र नटवरलाल चोकसी (अहमदाबाद) । **चैत्र वद-८** प.भ. अ.नि. सुमित हरिकृष्ण ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. पूजय श्री जटाशंकर बापा (ईन्दौर), प.भ. दुधाराम पूंजाजी (जलोत्रा-वाली-राज.), प.भ. अनाराम प्रभुजी (जलोत्रा-वाली-राज.) । **चैत्र वद-९** प.भ. अजयभाई करशनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.पू. मोटा महाराजश्रीना प्राकट्योत्सव दिने (ता. ११-४) ह. प.भ. रामदास बापा पटेल परिवार (उनावा) - ह. प.भ. भाविक पटेल), प.भ. भगवतभाई अंबालाल पटेल (भटासण), प.भ. भीमजीभाई पी. वालाजी (सुरत) । **चैत्र वद-१०** प.भ. अ.नि. सरोजबेन पी. दोशी (वडोदरा), प.भ. कमलाबेन कांतिलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. गौरांग उपेन्द्रभाई उपाध्याय जन्म दिने (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. भरतभाई ईन्दुलाल शाह, गं.स्व. मोंधीबेन धनजीभाई रादडीया (अहमदाबाद) । **चैत्र वद-१२** प.भ. रामदान गढवी (गांधीनगर), प.भ. प्रीतिबेन हितेषभाई (सुरत), प.भ. अ.नि. विरचंददास भावसार (सरसपुर), प.भ. कांताबेन रामाभाई पटेल (मोखासण), प.भ. कांताबेन भीमजीभाई वालाणी (सुरत), प.भ. लीलीबेन विनुभाई सावलीया (वडोदरा), शा. स्वा. जगतस्वरूपदासजी गुरु पुराणी स्वा. जगतप्रकाशदासजी (हरिद्वार), प.भ. अ.नि. ललीताबेन लालभाई पटेल (उनावा) । **चैत्र वद-१३** प.भ. नानुबेन रतनशीभाई पटेल (मोरबी), प.भ. महेन्द्रभाई त्रिकमलाल पटेल (करजीसण) । **चैत्र वद-१४** प.भ. अ.नि. डाह्याभाई बाभईदास पटेल (गवाडा), श्री घनश्याम महाराज (अहमदाबाद) । **चैत्र वद-३०** श्री नरनारायणदेव, प.भ. करशन प्रेमजी हिराणी (मांडवी-कच्छ) ।

वैशाख सुद-१ प.भ. धात्री काछडीया (निकोल) । **वैशाख सुद-२** प.भ. मिहीर निलेशकुमार पटेल (सरसपुर), प.भ. वेदांत रवि पटेल (अहमदाबाद), प.भ. कनुभाई सोमाभाई पटेल (गोता), प.भ. लाभुबेन हरिभाई सुतरीया (झमराला), प.भ. विशालभाई नरसिंहभाई सचावाडीया (मोरबी), प.भ. पर्व विनोदभाई प्रजापति (अहमदाबाद), प.भ. जीतेन्द्रभाई लालजीभाई पटेल (गोता), प.भ. सौमिल दिलीपभाई भीमाणी (अहमदाबाद), प.भ. हर्षाबेन किरीटकुमार गोहील (बोपल), प.भ. उदयन रजनीकांतभाई महेता

श्री स्वामिनारायण

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

(अहमदाबाद), प.भ. धवलभाई भावसार (सीडनी), प.भ. रतनबेन भीमजी भुवा (सुखपर-कच्छ), सांख्ययोगी रतनबाई भीमजी भुवा (सुखपर-कच्छ) । **वैशाख सुद-३/४** अ.नि. प.पू.स.गु. स्वा. कृष्णप्रसाददासजी गुरु स्वा. हरिप्रसाददासजी - ह. जगदीशभाई सांखला (कच्छ) । **वैशाख सुद-५** प.भ. किशनभाई डाह्याभाई माली (मुंबई), प.भ. केतनभाई गीरीशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मल्हार किरणभाई पटेल (अहमदाबाद) । **वैशाख सुद-७** प.भ. प्रफुलाबेन शशीकांतभाई गांधी (अहमदाबाद), प.भ. अरविंदभाई अंबालाल पटेल (अहमदाबाद) । **वैशाख सुद-८** प.भ. चेतनभाई नरसिंहभाई पटेल (झुंडाल) । **वैशाख सुद-९** प.भ. विमलाबेन ईश्वरलाल मोदी (अहमदाबाद) । **वैशाख सुद-१०** प.भ. दिपीकाबेन रविभाई हालाई (कच्छ), प.भ. प्रकाशभाई जसवंतभाई सोनी (विसनगर), प.भ. जयाबेन मोहनभाई रामपरीया (माणामोरा), प.भ. प्रेमबाई लक्ष्मण (भुज-कच्छ) । **वैशाख सुद-११** प.भ. करशनभाई जीणा जेसाई (बलदीया-कच्छ) । **वैशाख सुद-१२** प.भ. जयंतिभाई प्रागजीभाई टांक (सुरत), प.भ. अ.नि. मुलचंददास विरचंददास भावसार (सरसपुर), प.भ. रमेशभाई मधुभाई कथीरीया (सुरत), प.भ. मनजीभाई कल्याणभाई खेताणी (फोटडी-कच्छ), प.भ. अ.नि. कंकुबा टी. पटेल तथा डाहीबेन एन. पटेल (पोर), प.भ. किशोरभाई मावदिया (राजकोट), प.भ. विकेश लालजी हिराणी (सुखपर रोहा-कच्छ), प.भ. धर्मिष्ठाबेन हसमुखभाई पटेल (कंडारी), अ.नि. बलदेवभाई जगजीवनदास ठक्कर (कुंडल-साणंद), हरजी करशन लाखाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. दिकसी, किना, कंचन, श्यामल (बलदीया-कच्छ), प.भ. श्रेय दर्शन पटेल (अहमदाबाद), प.भ. जयंत के. याज्ञिक (अहमदाबाद) । **वैशाख सुद-१३** प.भ. सामबाई नारण रूडा भुडीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. दिपभाई प्रफुलभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. कांतिलाल खीमाणी (दर्हींसरा-कच्छ), प.भ. गिरधरलाल मुलजीभाई मिराणी (रापर-कच्छ) । **वैशाख सुद-१४** प.भ. अ.नि. शांताबेन जेशंगभाई चौधरी (बालवा) । **वैशाख सुद-१५** प.भ. अ.नि. आनंदीबेन पटेल (कणभा), प.भ. विनोदभाई पटेल (मोटेरा), प.भ. देवर्ष कमलेशभाई पटेल (अहमदाबाद) ।

वैशाख वद-१ प.भ.अ.नि. वाधजीभाई माधवदास पटेल (वडदला), प.भ. रसिकभाई शंकरभाई पटेल (सुरेन्द्रनगर), ओडलीकन्ट्रकशन प.भ. रूषि करशनभाई राघवाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. कनुभाई बाबुभाई पटेल (अहमदाबाद) । **वैशाख वद-२** प.भ. महेशभाई लालजीभाई ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. नटवरभाई रवजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. कांताबेन धुरालाल पटेल (सोजा), प.भ. अ.नि. ईन्द्रवदनभाई ५ मी पुण्यतिथि (अहमदाबाद) । **वैशाख वद-३** प.भ. अ.नि. केसरा खीमजी हिरजी हिराणी (गोडपर-कच्छ), शाश्वत ईन्फ्रा (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. दिनेश हरजी वरसाणी (सुखपर-कच्छ) । **वैशाख वद-४** अ.नि.स.गु. पुराणी स्वामी हरिस्वरूपदासजी, अ.नि. स.गु. शा. स्वा. ब्रह्मस्वरूपदासजी (एस.जी.वी.पी. गुरुकुल) । **वैशाख वद-५** प.भ. अ.नि. जसुबेन देवसी राबडीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. चिरागभाई हसमुखभाई राठोड (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. जसुबेन देवसी राबडीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. अ.नि. धीरूभाई ईश्वरभाई पटेल (मेडा) । **वैशाख वद-६** प.भ. अ.नि. जसुबेन देवसी राबडीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. अ.नि. वालजी देवसी करशन हिराणी (मानकुवा-कच्छ), प.भ. प्रेमीलाबेन रामजीभाई वेकरीया (सामत्रा-कच्छ) । **वैशाख वद-७** प.भ. अ.नि. जसुबेन देवसी राबडीया (सुखपर-कच्छ), अ.नि.स.गु. स्वा. श्रीरंगदासजी (अहमदाबाद मंदिर), प.भ. मणीबेन वल्लभभाई पटेल (रनेला-पंचमहाल), प.भ. अ.नि. लालजीभाई वल्लभभाई रामाणी (निकोल) । **वैशाख वद-८** प.भ. अ.नि. जसुबेन देवसी राबडीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. किरीटभाई नटवरलाल गज्जर (गांधीनगर), प.भ. कोकीलाबेन बिपीनभाई पटेल (सरसपुर), प.भ. अ.नि. महेन्द्रभाई गिरधरभाई पटेल (मेडा) । **वैशाख वद-९** प.भ. डुंगरशीभाई गोपालभाई निसर्ग (नवागाम-कच्छ) । **वैशाख वद-१०** प.भ. द्रष्टिबेन जयेशभाई खाटसुरीया (मुंबई), प.भ. कुमुदबेन भोगीलालभाई पटेल (माणज) । **वैशाख वद-१२** प.भ. अ.नि. प्रेमचंददास मुलचंददास भावसार (सरसपुर), प.भ. अरूणाबेन रमेशलाल कथीरीया (सुरत), प.भ. नितीनभाई घनश्यामभाई रसिकभाई (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. सोमाभाई नाथाभाई पटेल (कोठंबा), प.भ. अ.नि. विश्राम धनजी केराई (रामपर-कच्छ), प.भ. अंबारामभाई मूलजीभाई कणजरीया (घनश्यामनगर), प.भ. पोपटलाल वेलजीभाई चौधरी (सोलैया), प.भ. अनुसयाबेन गोपीनाथजी परिवार (वडोदरा), श्रीहरि टेकक्षटाईल्स श्री पंकजभाई (अहमदाबाद) । **वैशाख वद-१३/१४** प.भ. अशोकभाई शामजीभाई कणझरीया (मेमका), प.भ. अशोकभाई रावजीभाई कणजरीया (मेमका), प.भ. धर्म - धनश्री जयदिपभाई पटेल (जामफलवाडी) । **वैशाख वद-३०** प.भ. कानजीभाई धनजीभाई पिंडोरीया (गोधरा-कच्छ), प.भ. कानबाई करशन छभाडीया (गोधरा-कच्छ), प.भ. अ.नि. महेशभाई भक्तिदास पटेल (न्यु राणीप) ।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From** : Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji





धोलका मंदिर के १९९ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री



घोडासर (मणीनगर) नूतन मंदिर की शिलान्यास विधि करते प.पू. महाराजश्री



जामफल वाडी में पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. महाराजश्री



गुनमा मंदिर मे ठाकुरजी की आरती उतारते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. महाराजश्री




उनावा में कालिका माता मंदिर के २५ वे पाटोत्सव के अवसर पर आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा अपने मंदिर में अन्नकूट दर्शन



धमीज मंदिर में ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी



मूली मंदिर में अधिक मास पाटोत्सव अंतर्गत अन्नकूट दर्शन



अहमदाबाद मंदिर में अधिक मास के अवसर पर तुलसी विवाह के अवसर को मनाते हरिभक्त

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 “ Permitted to post at
Ahd Unaccountable L1 i/o. on 11 the every month under postal Regd. No.
GUJ. 581/2024-2026issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026





अधिक मास अंतर्गत अहमदाबाद मंदिर में धर्मकुल के आश्रय में

श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव, रामनवमी, चैत्री समैयो और रंगमहोल श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव और् सभा मंडप में कथा श्रवण करते हरिभक्त









Praful Kharsani